International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(IV), April - June, 2021, pp.195-198

जालोर जिले में कृषि आधारित उद्योगों की समस्याएं एवं समाधान

डॉ. आर.एन. शर्मा*
दिनेश कुमार साहू**

प्रस्तावना

किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास का सर्वोत्तम रास्ता औद्योगीकरण होता है क्योंकि यह उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों की उन्नति के साथ–साथ प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि का उत्तम साधन है।

औद्योगिक विकास में कृषि आधारित उद्योगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यूनाइटेड नेशन्स इन्डस्ट्रियल डेवलपमेंट ओर्गेनाइजेशन की परिभाषा के अनुसार वे उद्योग जो कृषि उपज को कच्चे माल के रूप में उपयोग कर व्यावसायिक स्तर पर वस्तुओं का निर्माण करते हैं, कृषि उद्योग की परिधि में आते हैं। कृषि आधारित उद्योग दो प्रकार के होते हैं प्रथम वे बड़े उद्योग जिनका महत्व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार जगत में होता है जैसे सूती वस्त्र उद्योग, कागज उद्योग, चीनी उद्योग आदि। द्वितीय लद्यु व कुटीर उद्योग जो स्थानीय व्यापार जगत में अहम भूमिका निर्वाह करते हैं जैसे आटा मिल, पापड़ उद्योग, पोहा मिल आदि। कृषि आधारित उद्योग आज भी विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे हैं?

अध्ययन क्षेत्र

जालोर जिला राजस्थान राज्य के दक्षिण–पश्चिम भाग में $24^0 37'$ से $25^0 49'$ उत्तरी अक्षांशों एवं $71^0 7'$ से $72^0 58'$ पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल 10640 वर्ग कि.मी. है जो कि राज्य का 3.11 प्रतिशत क्षेत्र घेरे हुए है। क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य में जिले का 12वां स्थान है। जिले की उत्तरी–पश्चिमी सीमा पर जिला जोधपुर, उत्तरी पूर्वी सीमा पर पाली जिला, पश्चिमी सीमा पर बाड़मेर जिला, दक्षिणी पूर्वी सीमा पर सिरोही जिला एवं दक्षिणी सीमा पर गुजरात राज्य स्थित है। जिले की औसत वार्षिक वर्षा 43 से.मी. है। अधिकतम औसत तापमान 45^0 C तथा न्यूनतम औसत तापमान 6.25^0 C है। जिले की प्रमुख नदियाँ लूनी नदी एवं उसकी सहायक नदियाँ जवाई, सूकडी, खारी, बाण्डी, सागी आदि है।

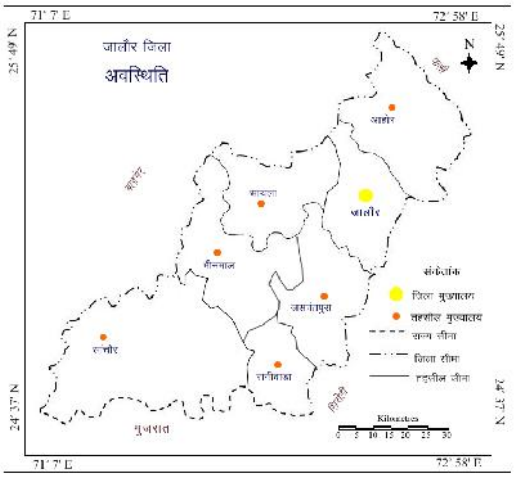

मानचित्रः जालोर जिले की अवस्थिति

G विभागाध्यक्ष, भूगोल शास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोधार्थी, भूगोल शास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

उद्देश्य

- अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों की समस्याओं का पता लगाना।
- अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों की समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव देना।

परिकल्पना

- विभिन्न सरकारी प्रयासों एवं औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना से जालोर जिले में कृषि आधारित उद्योगों की विभिन्न समस्याओं का समाधान हुआ है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए विषय पर उपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित लेखों पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रतिवेदनों का सूक्ष्म अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की सूचनाऐं सरकारी कार्यालयों से एकत्रित करके विश्लेषित की गयी हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सामग्री तथा आंकड़ों का एकत्रीकरण निम्नलिखित स्त्रोतों से किया गया है।

- **प्राथमिक स्त्रोतः** इस सम्बन्ध में अनुसूची, प्रश्नावली, परिचर्चा तथा कार्यकरण के बारे में व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से उपयोग किया गया है।
- **द्वितीय स्त्रोतः** इस सम्बन्ध में प्रकाशित व अप्रकाशित सामग्री, पत्र–पत्रिकाओं, लेखों, उद्योगों की सूचनाओं का उपयोग किया गया है।

कृषि आधारित उद्योग

जालोर जिला एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ विभिन्न साधनों से सिंचाई द्वारा भी कृषि कार्य किया जाता है। खरीफ की फसल अधिकांशतया मौसमी वर्षा पर निर्भर है। अच्छी वर्षा होने पर बाजरा, मूंग, मौंढ, ग्वार, तिल, मतीरा, मूंगफली आदि की फसल अच्छी तादाद में होती है।

जिले में नर्मदा के जल से सिंचाई सुविधा प्राप्त होने से खाद्य आधारित उद्योगों के विकसित होने की विपुल संम्भावनाऐं है। जिनमें पपीता, अनार, आलू, दालमिल, मसाला व अनाज पिसाई, पशु आधर, ग्वारगम, मूंगफली, ईसबगोल, टमाटर केचअप, तेल मिल आदि खाद्य पदार्थ आधारित उद्योग विकसित हो सकते हैं।

कृषि आधारित उद्योगों की समस्याएं

- **स्थलाकृतिः** जालोर जिले का अधिकांश भाग समतल है लेकिन इसके उत्तरी भाग में छितरी पहाड़ियाँ, मध्य भाग में छोटी पहाड़ियाँ, पूर्वी भाग में चट्टानी एवं दक्षिणी भाग में बालू के टीले व बालू के करक स्थित हैं। जिन कारणों से औद्योगिक विकास की पूर्णतः अनुकूल दशाएं नहीं है।
- **जलवायु सम्बन्धी समस्याः** जिले में जलवायु सम्बन्धी समस्या का मुख्यतः प्रभाव कृषि पर पड़ता है क्योंकि समय में वर्षा की अनिश्चितता में बढ़ोत्तरी हो रही है, वैश्विक तापमान बढ़ रहा है, मौसमों की समय सीमा में परिवर्तन हो रहा है। इन सभी कारणों से कृषि उत्पादन में भी कमी–वृद्धि होती रहती है जिसका कृषि आधारित उद्योगों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
- **जल का अभावः** कृषि आधारित उद्योगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक जल है क्षेत्र में मुख्य नदी लूनी व उसकी सहायक नदियाँ है जिसका जल बाड़मेर के बालोतरा के पश्चात् खारा हो जाता है एवं ये नदियां वर्षाकाल में ही प्रवाहित होती हैं। अतः जल की कमी क्षेत्र के औद्योगिक विकास की प्रमुख समस्या है लेकिन वर्तमान में नर्मदा नहर परियोजना से जल प्राप्ति के कारण यह समस्या जिले के कई क्षेत्रों में हल होती नजर आ रही है।
- **शक्ति के साधनों का अभावः** उद्योगों के संचालन के लिए शक्ति की प्रमुखतः आवश्यकता होती है, क्षेत्र में बिजली की आपूर्ति सुदृढ़ नहीं है ग्रामीण क्षेत्रों में हालात अधिक बदतर है कृषि आधारित उद्योगों का विकास तभी संभव है जब जिले को बिजली आपूर्ति सुचारू रूप से मिले।

- **कच्चे माल की कमी:** कृषि आधारित उद्योगों का उत्पादन तो होता है लेकिन उसके अधिकांश भाग का प्रयोग घरेलू उपयोग में ही किया जाता है जिसके फलस्वरूप इन उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध नहीं हो पाता है।
- **परिवहन व संचार के साधनों का अभाव:** जालोर जिले में परिवहन के साधनों का अभी भी अभाव है एक मात्र राष्ट्रीय राजमार्ग न. 15 स्थित है एवं राजकीय राजमार्ग 11, 16, 31, 38 व 64 स्थित है। पक्की सड़कें जिले को अन्य जिलों से जोड़ती है ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कें कच्ची हैं। रेलवे की एक ही लाईन है जो जोधपुर से गुजरात में भीलड़ी रेलवे जंक्शन को मिलाती हैं। अतः आवश्यक है कि परिवहन के ढाँचें को सुद्धढ़ किया जाए। मोबाइल क्रान्ति से संचार के हालात सुधरने लगे हैं।
- **प्रशिक्षित व तकनीकी श्रमिकों का अभाव:** जिले में प्रशिक्षित व तकनीकी कर्मचारियों का अभाव है जो कि कृषि आधारित उद्योगों को उच्च तकनीक से वंचित रखता है, इस कारण तकनीकी व्यक्ति बाहरी राज्यों से आते हैं।
- **पूँजी की कमी:** जिले के कृषि आधारित उद्योगों की सबसे बड़ी समस्या पूँजी की कमी का सामना करना पड़ता है, क्योंकि यहाँ का कृषक गरीब है एवं उद्योगपति भी विभिन्न कारणों से अपनी पूँजी का निवेश क्षेत्र के उद्योगों में नहीं करते हैं। अतः आवश्यक है सरकार इस समस्या पर अपना ध्यान दे एवं सुविधाएँ उपलब्ध करवाये।
- **सीमित बाजार:** राज्य की अधिकांश जनसंख्या गरीब है तथा उसका जीवन स्तर भी निम्न है फलस्वरूप औद्योगिक उत्पादों की मांग कम है इसलिए उद्योगपति उद्योग लगाने में हिचकिचाते हैं। परिवहन की सुविधा बढ़ने के साथ–साथ यह समस्या धीरे–धीरे कम होने लगी है क्योंकि उद्योगों से निर्मित माल को बाजार मिलने लगा है, लेकिन परिवहन की सुविधा पूर्णतः विकसित नहीं है।
- **बिगड़ते औद्योगिक सम्बन्ध:** मंहगाई में बढ़ोत्तरी, श्रमिकों की दृढ़धर्मिता के साथ उद्योगपतियों में शोषण की प्रवृत्ति से आपसी औद्योगिक सम्बन्धों में कड़वाहट पैदा हो गई है जिसमें आए दिन तालाबंदी, श्रमिकों की हड़ताल आदि स्थितियाँ उत्पन्न होती है जिससे औद्योगिक विकास रूकना अपरिहार्य है।
- **कुशल प्रबन्धकों की कमी:** एक उद्योग के विकास के लिए कुशल प्रबन्धक की आवश्यकता होती है। कुशल प्रबन्धक ही किसी उद्योग को आगे बढ़ा सकता है। लेकिन क्षेत्र में इनकी कमी है।

कृषि आधारित उद्योगों की समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव

- कृषि आधारित उद्योगों को आधारभूत सुविधाऐं जैसे पानी, बिजली, परिवहन आदि की सुविधाऐं उपलब्ध कराना।
- कृषि आधारित उद्योगों को ऋण आसानी से एवं कम ब्याज पर दिया जाना चाहिए।
- कृषि आधारित उद्योगों को ऋण या वित्त की सुविधा का प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए।
- ऋण पर ब्याज की सब्सिडी दी जानी चाहिए तथा इसका प्रचार व प्रसार भी पर्याप्त होना चाहिए।
- समग्री की गुणवत्ता हेतु तैयार किये गये मानकों का कडाई से पालन करवाना चाहिए।
- कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना एवं संचालन हेतु प्रोत्साहन योजनाओं का लोगों तक लाभ पहुँचाना सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- उद्योगों के कर्मचारियों को तकनीकी ज्ञान की जानकारी मुहैया करवानी चाहिए।
- रूग्ण ईकाईयों को पुनर्जीवित करने हेतु सुविधाएँ प्रदान करना।
- निर्यातोन्मुख ईकाईयों को प्राथमिकता एवं निर्यात प्रोत्साहन औद्योगिक पार्क की स्थापना करना।
- कोल्ड स्टोरेज एवं भण्डार गृहों की संख्या में वृद्धि करना।

निष्कर्ष

जालोर जिले में विभिन्न फसलों का उत्पादन होता है जो कि कृषि आधारित उद्योगों में कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होती है। जिले में औद्योगिक विकास हो रहा है लेकिन विभिन्न समस्याऐं विद्यमान है जो कि विकास के पथ पर बाधक हैं। जिससे विभिन्न समस्याऐं जैसे पूंजी की समस्या, शक्ति की समस्या, जलापूर्ति, यातायात के साधनों की समस्या आदि को महत्वपूर्ण कदम उठा कर दूर किया जा सकता है। प्रशिक्षित व तकनीकी श्रमिकों की समस्या, बाजार की उपलब्धता, कुशल प्रबन्धन जैसी समस्याओं को विभिन्न योजना बना कर दूर किया जा सकता है। अतः आवश्यक है कि सरकार व उद्योगपति क्षेत्र के कृषि आधारित उद्योगों पर अपना ध्यान केन्द्रित करें एवं विभिन्न सुविधाऐं उपलब्ध करावें, जिससे क्षेत्र में औद्योगिक विकास तीर्व हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ओझा, एस.के. (2017), कृषि प्रौद्योगिकी, बौद्धिक प्रकाशन
2. कुमारी सरीता, ठाकुर दीनानाथ (2018), कृषि भूगोल, राजेश प्रकाशन
3. सक्सेना, हरिमोहन (2018), राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
4. जिला उद्योग केन्द्र, जालोर (जिले की औद्योगिक संभावनाऐं) (2017–18)
5. कृषि सांख्यिकी एट ए ग्लान्स वर्ष 2018–19.

❖◆❖